स्नातकोत्तर हिन्दी सेमेस्टर-2
पत्र - 6

डा० पूनम कुमारी
अध्यक्ष - हिन्दी विभाग
एस० बी० कॉलेज,
आरा

महाकवि बिहारीलाल

महाकवि बिहारीलाल का हिन्दी साहित्य में अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान है। इसका ज्वलंत प्रमाण यही है कि बिहारी को अपने एकमात्र ग्रंथ 'बिहारी सतसई' से उतनी कीर्ति मिली जितनी अन्य महाकवियों को अनेक ग्रंथों का निर्माण करने पर भी नहीं मिल पाई। इसका एक-एक दोहा एक-एक रत्न माना जाता है। बिहारी सतसई की पचासों टीकाएँ अब तक हो चुकी हैं। मुक्तक शैली में रचित इस कृति में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो सफल मुक्तक काव्य के लिए आवश्यक माने गए हैं।

महाकवि बिहारी के जीवन से संबंधित ज्ञात-अज्ञात तथ्य निम्नलिखित हैं:-

जन्म ग्वालियर जानिए खंड बुंदेले बाल।
तरुणाई आई सुघर मथुरा बसे ससुराल॥

जन्म - 1603 ई; ग्वालियर राज्यान्तर्गत बसुआ गोविंदपुर
निधन - 1663 ई.
जाति - माथुर चौबे, पिता - केशव राय
रचना - बिहारी सतसई (713 दोहे)
आश्रित राजा - मिर्जा राजा जय सिंह
भाषा - ब्रजभाषा
छंद - दोहा सोरठा
प्रमुख रस: शृंगार (संयोग एवं वियोग)
टीका - सतसई की प्रथम टीका लिखने वाले कृष्ण कवि (पुत्र)।

Scanned with CamScanner

बचपन में ही बिहारी अपने पिता के साथ ग्वालियर से ओरछा चले गए थे जहाँ प्रसिद्ध रीतिवादी कवि आचार्य केशव दास से काव्य की विधिवत शिक्षा पायी। ओरछा में उन्होंने विभिन्न ग्रंथों और संस्कृत, प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने निम्बार्क सम्प्रदाय के बाबा नरहरि दास को अपना गुरु बनाया। वैसे तो कवि रहीम और शाहजहाँ के भी ये कृपापात्र थे, पर जयपुर के राजा जयसिंह तथा उनकी पटरानी अनन्त कुमारी को अपने एक दोहे से इन्होंने विशेष प्रभावित किया था और उनके राजकवि भी हो गए। वह दोहा है -

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहीं विकास इहि काल।
अब कली ही सो बँध्यो आगे कौन हवाल॥"

कथा यह भी मिलती है कि महाराजा जयसिंह के आग्रह पर ही इन्होंने सतसई के दोहों की रचना की थी। महाराजा ने प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी देने की घोषणा की तथा बिहारीलाल ने इस तरह सात सौ दोहों की रचना की और सात सौ अशर्फियाँ पायीं। बिहारी की काव्य-कला का आधार लोकज्ञान और शास्त्र ज्ञान है। उन्होंने ब्रजभाषा को काव्यात्मक अभिव्यंजना के शिखर पर पहुँचाया। परवर्ती कवियों पर उनकी शक्ति और भाषा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। बिहारी की कवि-प्रतिभा की प्रखरता को आचार्य शुक्ल जैसे लोकवादी और प्रबंधप्रिय आलोचक ने भी स्वीकार किया है -

"सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर
देखन में छोटन लगैं, घाव करैं गंभीर॥"

डा. श्यामसुन्दर दास ने लिखा है कि बिहारी सतसई मानस के बाद सबसे अधिक प्रचारित कृति है। आचार्य विश्वनाथ प्र. मिश्र, बिहारी को हिन्दी साहित्य का बेजोड़ कवि मानते हैं। सर जार्ज ग्रियर्सन का मानना है कि संपूर्ण विश्व में बिहारी सतसई के समकक्ष कोई रचना प्राप्त नहीं होती।

Scanned with CamScanner